International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 5, Issue 1 Jan. 2023, pp: 665-668 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

उमरिया जिले में जनजातियों के रोजगार का स्वरूप एवं अध्ययन

डॉ.आमिर एजाज[1], रामप्रसाद सिंह[2]
विभागअध्यक्ष(शोध निर्देशक), सहायक प्राध्यापक
शोधार्थी
भूगोल विभाग, भूगोल विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुरमहाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर

Date of Submission: 12-01-2023 Date of Acceptance: 24-01-2023

प्रस्तावना: जनसंख्या का भूगोल सामान्य मानव भूगोल की सबसे अच्छी तरह से स्थापित शाखाओं में से एक है। यद्यपि भूगोल के भीतर अनंत प्रवृत्तियाँ और धाराएँ हैं , कई भूगोलवेत्ता , 20वीं शताब्दी की शुरुआत की भौगोलिक परंपरा का पालन करते हुए , यह मानते हैं कि भूगोल मनुष्यों के उनके पर्यावरण के साथ संबंधों का अध्ययन करता है। इनमें से कई भूगोलवेत्ताओं के लिए , भूगोल, सबसे ऊपर, मानव भूगोल है, जहाँ जनसंख्या व्यावहारिक रूप से अध्ययन का एकमात्र विषय है , हालाँकि रुचि के कई केंद्र हैं। जनसंख्या का भूगोल द्वारा सबसे अधिक अध्ययन किए गए प्रश्नों में से एक पृथ्वी की सतह पर मनुष्यों का वितरण और मानव जाति की संख्यात्मक वृद्धि दर है। यह वृद्धि सम नहीं है। जबकि कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या तेजी से बढ़ती है, अन्य में यह समान रहती है और यहां तक कि घट जाती है। इसने जनसंख्या वृद्धि के विभिन्न भौगोलिक मॉडलों की स्थापना की अनुमति दी है, जो सापेक्ष महत्व के विभिन्न स्तरों द्वारा परिभाषित किया गया है , जो कि जनसांख्यिकीय चर , जैसे कि जन्म , मृत्यु और प्रवासन में हैं , जो सभी आम तौर पर सामाजिक-आर्थिक और यहां तक कि राजनीतिक कारकों से संबंधित हैं।

सामान्य अर्थ में, भूगोल स्थलीय सतह पर तथ्यों और घटनाओं के वितरण का प्रभारी है। अधिक ठोस अर्थों में , रिचथोफेन की क्लासिक परिभाषा के अनुसार, भूगोल में "स्थलीय सतह का अध्ययन और इसे पारस्परिक रूप से प्रभावित करने वाली घटना" शामिल है। इस परिभाषा को जनसंख्या भूगोल तक विस्तारित करते हुए , हम स्वीकार कर सकते हैं कि जनसंख्या भूगोल स्थलीय सतह पर मानव आबादी के वितरण का अध्ययन करता है और उन अंतरों को समझाने की कोशिश करता है जो कुछ स्थानों की ऐसी आबादी दूसरों की तुलना में मौजूद हैं , जैसे संरचना, आंतरिक गतिकी, अंतरिक्ष गतिशीलता , जीवन का तरीका , गतिविधि, आदि।

जनसंख्या भूगोल का महत्व

यह तर्क दिया जाता है कि समकालीन जनसंख्या भूगोल की प्रकृति 1960 और 1970 के दशक में पूरे मानव भूगोल में संचालित दृष्टिकोण और विधियों में आमूल-चूल परिवर्तन की तुलना में 1950 के दशक में जनसंख्या भूगोल के भूगोल की एक मान्यता प्राप्त शाखा के रूप में विशेष रूप से उभरने और विकास के लिए ; फिर भी इन शुरुआती जड़ों को कम से कम स्वीकार किया जाना चाहिए और संक्षेप में पता लगाया जाना चाहिए।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 5, Issue 1 Jan. 2023, pp: 665-668 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

1950 के दशक की शुरुआत में जनसंख्या भूगोल भूगोल की एक व्यवस्थित शाखा के रूप में उभरा। इसका अधिकांश श्रेय ट्रेवार्था को जाता है , जिन्होंने एसोसिएशन ऑफ अमेरिकन के लिए अपने अध्यक्षीय भाषण के मंच का उपयोग किया

1953 में भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या भूगोल के लिए एक शक्तिशाली मामला और एक रूपरेखा तैयार की। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल में जनसंख्या प्रमुख तत्व था , और वह जिसके चारों ओर अन्य सभी उन्मुख होते हैं , और वह जिससे वे सभी अपना अर्थ प्राप्त करते हैं (ट्रेवार्था , *1996)*। स्थानिक वितरण और जनसंख्या विशेषताओं का क्षेत्रीय विभेदीकरण स्पष्ट रूप से इस समय जनसंख्या भूगोल के भीतर एकीकृत सूत्र थे। इस प्रकार, ट्रेवर्था (*1953)* ने अपने उद्देश्य को 'पृथ्वी के लोगों के आवरण में क्षेत्रीय अंतरों की समझ' के रूप में देखा , जबकि भिंडे , ए.ए. और कानिटकर , टी. (*1998)* ने सोचा कि 'जनसंख्या भूगोल का उद्देश्य परिभाषित करना और सामने लाना है। मानव निवासियों की संख्या और प्रकार में एक स्थान से दूसरे स्थान पर अंतर का महत्व। जनसंख्या भूगोलवेत्ता की भूमिका को ज़ेलिंस्की विल्बर (*1966)* द्वारा 'स्थानों की समग्र प्रकृति के संदर्भ में जनसंख्या के स्थानिक पहलुओं का अध्ययन ' और ब्यूजेउ गैमियर (*1966)* द्वारा 'जनसांख्यिकीय तथ्यों को उनके वर्तमान पर्यावरणीय संदर्भ में वर्णित करने' के रूप में माना गया था।

भारत में सर्वप्रथम जनगणना *1872* ई. में हुई, परन्तु जनसंख्या की समस्या पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। भारत में जनसंख्या पर पहला सम्मेलन *1936* में लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया था। तब से , विश्वविद्यालयों और संस्थानों ने कई अध्ययन और शोध कार्य किए। अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या अध्ययन संस्थान मुंबई में स्थापित किया गया था। हाल के समय में , विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने भौगोलिक पृष्ठभूमि और भारत की जनसंख्या के बीच संबंधों पर पुस्तकें लिखी हैं। भारत में जनसंख्या भूगोल साठ के दशक की शुरुआत में वास्तविक रूप से शुरू हुआ। इसने पिछले चालीस वर्षों में सराहनीय प्रगति की है , और कई विश्वविद्यालयों (कृष्ण , *1997)* के भूगोल पाठ्यक्रम में एक विशेष पाठ्यक्रम के रूप में एक स्थान पाया है। भारतीय जनगणना में निहित भारी मात्रा में डेटा ने भूगोलवेत्ताओं को देश के लगभग हर हिस्से के लिए सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों पर जनसंख्या का भौगोलिक विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया। हाल ही में , फील्डवर्क के आधार पर सूक्ष्म स्तर के अध्ययन की प्रवृत्ति ने कम से कम अनुसंधान स्तर पर अधिक ध्यान दिया है और उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। अनुसंधान फोकस में प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं क्योंकि जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं को भारत में अलग-अलग किया जा सकता है , वे धीरे-धीरे मैक्रो से सूक्ष्म स्तर के अध्ययनों में स्थानांतरित हो रहे हैं। जनसंख्या भूगोल की सामग्री को मुख्य और परिधीय मुद्दों में अलग किया जा सकता है। मूल रूप से वे मुख्य रूप से जनसंख्या के वितरण और संरचना से संबंधित हैं

मध्य प्रदेश के उमरियाजिले को सामान्यतया जनजाति बाहुल्य वाला माना जाता है। तथा इसी आधार पर पिछड़े हुए जिले की संज्ञा भी दी जाती है यह सत्य है कि जिले में लगभग आधी जनसंख्या जनजातियों की है जिन्हें आज भी समाज में हीन दृष्टिकोण से देखा जाता है यह एक प्रकार की अभिवृत्ति है जनजातीय जीवन मूल्य एवं परंपराओं का अध्ययन करके इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि भले ही अपेक्स दया उनमें विकास परिलक्षित ना हो परंतु तथाकथित विकास की विकृतियों से वे सर्वथा मुक्त हैं तथा पारदर्शी जीवन जीते हुए धरती तथा पर्यावरण से जुड़े हैं साक्षरता की आहट कमजोर हो लेकिन अनुभव की विराट संपदा उनके पास है

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्र 4548 वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ है और इसकी आबादी 515,963 है। उमरिया जंगलों और खनिजों के अपने विशाल

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 5, Issue 1 Jan. 2023, pp: 665-668 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

संसाधनों से समृद्ध है। कोयला खदानें जिले के लिए राजस्व का एक स्थिर स्रोत हैं।

अनुसंधान उद्देश्य

- जनजातियों का स्थानिक विवरण प्रतिरूप का अध्ययन करना।
- जनजातियों का भौगोलिक वातावरण के संबंधों का मूल्यांकन करना।
- जनजातियों के स्थानिक विवरण एवं वातावरण के संबंधों का अध्ययन करना तथा उनमें आए परिवर्तनों की जांच करना।
- जनजातीय संस्कृति रीति रिवाज एवं अन्य धार्मिक कार्यों को संरक्षित करना।
- जनजातियों में व्याप्त आर्थिक राजनीतिक सामाजिक समस्याओं का पता लगाना।
- जनजातियों के विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना एवं उनकी कमियों का पता लगाना।
- जनजातियों में व्याप्त समस्याओं का पर्यावरण के अनुकूल निदान के प्रयास हेतु भावी विकास की रणनीति तय करना।

शोध विधि

- शोध कार्य में समंकोके लिए सरकारी प्रकाशनों , अर्धशासकीय संस्थाओं के प्रकाशन, आयोग एवं समितियों की रिपोर्ट, अप्रकाशित स्रोत, साहित्य, दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार पत्र , मासिक पत्रिकाएं आदि से आंकड़े एवं तथ्य प्राप्त किए गए हैं।
- परीक्षण हेतु शोधकर्ता ने विभिन्न जनजातीय महिलाओं पुरुषों से मिलकर यह जानने का प्रयास किया है कि ये लोग सामाजिक आर्थिक विकास में कहां-कहां लाभान्वित हुए हैं।

निष्कर्ष

जिले में जनजातीय समूह के रोजगार के लिए ज्यादातर लोग मत्स्य पालन ,वनोपज संग्रह, लकड़ी काटकर शहरों में बेचना , घरेलू कार्य करना (दूसरों के घरों में) , तेंदूपत्ता संग्रह करके बेचना , शहद, महुआ , जड़ी-बूटी , देसी दवाइयां बेचना है । सर्वेक्षण में यह पता लगा कि जिले में कुछ जनजातियां ऐसी हैं जिनके पास कृषि योग्य भूमि होने के बावजूद अपनी भूमि पर कृषि कार्य ना करके बड़े किसानों के यहां श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं इसका कारण पूछने पर यह पता लगा कि वे कृषि पर मानसून की निर्भरता , सही समय पर खाद बीज की उपलब्धता ना होने की कारण बताया गया। सरकार द्वारा कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु नवीन तकनीक तथा कृषि से संबंधित जानकारी जिले की अधिकांश जनजातीय लोगों को नहीं है। वे इन योजनाओं के प्रति अनभिज्ञ तथा उदासीन है क्योंकि वह काफी संख्या में अशिक्षित हैं इस प्रकार जिले की जनजातियां कृषि , मजदूरी एवं बहुत ही कम भाग जो शासकीय नौकरी में है जिले में जनजातियों के स्वरोजगार हेतु कई कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिनके लाभ आगामी समय में परिलक्षित होंगे।।

संदर्भसूची

[1]. बेंद्रे आशा और कौतकर तारा (*2006),* "जनसंख्या अध्ययन का सिद्धांत"। हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई।

[2]. बोरोले लीना (*2008),* "में जनसंख्या विशेषताओं का अनुपात-लौकिक विश्लेषण

[3]. धुले जिले की शिरपुर तहसील "। उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय , जलगाँव में प्रस्तुत एम.फिल शोध प्रबंध।

[4]. चंदना आर.सी. (*1994),* "जनसंख्या का भूगोल", कल्याणी प्रकाशक, लुधियाना।

[5]. चौधरी आर.सी. (*2009),* "जनसंख्या का भूगोल" कल्याणी प्रकाशक, नई दिल्ली।

[6]. चौधरी एस.आर. (*1994),* "पैटर्न्स ऑफ डेथ रेट इन महाराष्ट्र"। महाराष्ट्र भूगोलशास्त्र संशोधन पत्रिका, खंड-*VIII,* संख्या-*1* पीपी। *13-23*।

[7]. चव्हाण सवितस्मिता वी। और बिदवे बीएस (*2012),* "आदिवासी विकास पर सरकारी नीतियों का मूल्यांकन बदलापुर

शहर में चमटोली समूह ग्रामपंचायत की जनजातीय आबादी का अध्ययन

[8]. ठाणे जिले के। लातूर भूगोलवेत्ता , *Vol.I,* अंक। मैं मई *2012,* पीपी। *12-19*।

[9]. चोलके एस.पी. &चौधरी सी.बी. (*2011),* "अहमदनगर जिले की जनसंख्या वृद्धि में दशकीय भिन्नता" , महाराष्ट्र भुगोलशास्त्र संशोधन पत्रिका, वॉल्यूम- *XXVIII,* नंबर *2* जुलाई दिसंबर *2011,* पीपी *39-52*।

[10]. देवर रवि एस और वायलीज प्रल्हाद वाई (*2011),* "जनसंख्या वृद्धि और नंदगांव तहसील, नासिक जिला (महाराष्ट्र) में भूमि उपयोग प्रोफ़ाइल बदलना"। जर्नल ऑफ रिसर्च एंड

[11]. विकास, *Vol.1,* अंक *8* अगस्त-सितंबर..*2011,* पीपी *75-81*।

[12]. सांगवान रणधीर सिंह और स्नेह सांगवान (*2009),* "लिंग अनुपात: ग्रामीण-शहरी में रुझान

[13]. डिफरेंशियल", लेन-देन, जर्नल ऑफ द इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन ज्योग्राफर्स। वॉल्यूम - *31,* नंबर *2,*

[14]. पीपी.*167-180*।

[15]. शर्मा पवन कुमार (*2007),* "चंडीगढ़ में ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि गतिशीलता

[16]. परिधि क्षेत्र "। एनल्स ऑफ़ नेशनल एसोसिएशन ऑफ़ जियोग्राफर्स , इंडिया, *Vol.XXVII,* नंबर *1* जून *2007.Pp.61-75*।

[17]. शर्मा आर.के. (*2004),* "जनसांख्यिकी और जनसंख्या की समस्याएं", अटलांटिक